Available onlineAt http://www.nrjp.co.in

एकात्म
संस्करण १, अंक १, चैत्र मास, २०१८

National Research & Journal Publication

समीक्षा लेख

वटवृक्ष जनसंघ की जड़ः पंडित दीनदयाल उपाध्याय

अनिल कुमार गुप्ता
प्रवक्ता, बी एन एस डी इंटर कालेज, कानपुर

सारांश

भारतीय राजनीति को नया वैचारिक धरातल देनेवाले पंडित दीनदयाल उपाध्याय का यह जन्मशती वर्ष है। विगत 25 सितंबर को उनकी सौंवी जन्म–जयंती थी। इस अवसर पर सत्तारूढ़ भाजपा और सरकार ने विधिवत अनेक कार्यक्रम कर साल भर चलनेवाले आयोजनों का औपचारिक प्रारंभ किया, पर भाजपा से परे अन्य दलों और सामान्य–जन के बीच इस पर न के बराबर चर्चा हुई, जैसे कि दीनदयाल सिर्फ भाजपा के ही हों! दुर्भाग्य से 20 वीं सदी के इस विलक्षण विचारक के बारे में देश में बहुत कम जानकारी है। जो जानते भी हैं, वे भी इतना ही जानते हैं कि भाजपा रूपी वटवृक्ष की जड़ों को जनसंघ के रूप में सींचनेवाले उपाध्याय ही थे।

जनसंघ के संस्थापक डा. श्यामाप्रसाद मुखर्जी की जनसंघ की स्थापना के दो वर्ष के भीतर ही कश्मीर की जेल में मृत्यु हो गयी या शायद हत्या कर दी गयी। उसके बाद पं दीनदयाल ने अकेले विषम परिस्थितियों में 16 वर्ष तक अत्यंत परिश्रम से जनसंघ को खड़ा किया। 'स्व' के लिए कुछ न चाह कर अपना सारा जीवन संगठन और देश को दे दिया। 1968 में अध्यक्ष बनने के दो महीने बाद ही रेल–यात्रा के दौरान उनकी निर्मम हत्या कर दी गयी और देश हमेशा के लिए एक प्रखर चिंतक और विलक्षण राजनेता से वंचित हो गया।

मुख्य शब्द : *एकात्म, मानववादी दर्शन, मानवता, दीनदयाल उपाध्याय।*

52 वर्ष की उम्र में पं दीनदयाल चले गये, पर अपने पीछे इतना कुछ छोड़ गये कि इस देश के राष्ट्रवादी उनके ऋण से कभी उऋण नहीं हो सकेंगे। जिस संगठन के पौधे को उन्होंने सींचा, वह आज भाजपा के रूप में हमारे सामने है। लेकिन, जो विचार उन्होंने दिये, वे पूरे देश के हैं। उनकी विचारधारा का मुख्य सोपान था उनका दिया श्एकात्म मानव–दर्शनश का सिद्धांत, जिसे आज भाजपा अपनी विचारधारा का आधार कहती है। क्या है यह एकात्म मानव–दर्शन? मूलतः यह भारतीय संस्कृति, विचार और दर्शन का निचोड़ है। जिस समय पूरा विश्व पूंजीवाद और साम्यवाद की अच्छाई–बुराई की बहस में उलझा था, पं दीनदयाल ने हस्तक्षेप करते हुए इन दो चरम विचारधाराओं से इतर एकात्म मानववाद की सम्यक अवधारणा दी।

पूंजीवाद ने मानव को एक आर्थिक इकाई माना और उसके समाज से संबंधों को एक अनुबंध से ज्यादा कुछ नहीं समझा, साम्यवाद ने व्यक्ति को मात्र एक राजनीतिक और कार्मिक इकाई माना। साम्यवाद के प्रवर्तक मार्क्स ने मानव–समाज को एक विखंडित आपसी संबंध–विहीन भीड़ की तरह देखा, जिसमें एक वर्ग अपना आधिपत्य जमाने के लिए स्वार्थपूर्ण नियम और प्रथाओं को लागू करता है। समाजवाद में भी व्यक्ति को एकांगी माना गया। मूलतः पश्चिम की सभी विचारधाराएं संक्रेंद्रित (कन्सेंट्रिक) हैं। हालांकि, व्यक्ति उन सबके मूल में है, लेकिन उससे कुछ परे हट कर परिवार, समुदाय और राज्य हैं, जो पश्चिमी विचारकों के अनुसार, एक–दूसरे से अलग हैं।

इनसे परे, एकात्म मानववाद में व्यक्ति से परिवार, परिवार से समाज, समाज से राष्ट्र और फिर मानवता और चराचर सृष्टि का विचार किया गया है। 'एकात्म मानववाद' इन सब इकाइयों में अंतर्निहित, परस्पर–पूरक संबंध देखता है। भारतीय चिंतन जिस तरह से सृष्टि और समष्टि को एक समग्र रूप में देखता है, वैसे ही पं दीनदयाल ने मानव, समाज और प्रकृति व उसके संबंध को समग्र रूप में देखा। मनुष्य को 'एकात्म मानव–दर्शन' में तन–मन–बुद्धि और आत्मा का सम्मिलित स्वरूप माना गया। मानव की यह समग्रता ही उसे समाज के लिए उपयुक्त और उपादेय बनाती है। भारतीय चिंतन द्वारा प्रतिपादित धर्म, अर्थ, काम के प्रतीकों के रूप में मानव आत्मा को मोक्ष की ओर प्रवृत्त करनेवाला विचार ही 'एकात्म मानववाद' में समाविष्ट है। समग्र मानव को निर्मित करनेवाले इन चार तत्वों में एकात्मता अपेक्षित है, क्योंकि यही एकात्मता मानव को कर्मठता की ओर प्रेरित कर उद्यमी बना सकती है, जिससे समाज का हित–संवर्धन संभव है।

ऐसा नहीं कि पं दीनदयाल का 'एकात्म मानववाद' महज एक वैचारिक अनुष्ठान था। इसमें राजनीति, समाजनीति, अर्थव्यवस्था, उद्योग, उत्पादन, शिक्षा, लोक–नीति आदि पर व्यापक और व्यावहारिक नीति–निर्देश शामिल थे, जिन्हें आज केंद्र में शाषित भाजपा सरकार अपना मार्ग–दर्शक सिद्धांत मानती है। प्रधानमंत्री मोदी द्वारा पेश की गयीं ज्यादातर योजनाएं– दीनदयाल उपाध्याय ग्रामीण–कौशल योजना, स्टार्ट–अप व स्टैंड–अप इंडिया, मुद्रा बैंक योजना, दीनदयाल उपाध्याय ग्राम ज्योति योजना, सांसद आदर्श–ग्राम योजना, मेक–इन–इंडिया आदि एकात्म मानववाद के सिद्धांतों से प्रेरित हैं। 'सबका साथ, सबका विकास' जैसा नारा भी उन्हीं की 'अंत्योदय' (समाज के अंतिम व्यक्ति का उत्थान) की अवधारणा पर आधारित है।

पं दीनदयाल एक युग–द्रष्टा थे। आजादी के बाद जब उन्होंने भारत के विकास के लिए ग्रामीण–विकास और लघु–उद्योग को बढ़ावा देने की बात की, तो किसी ने ध्यान नहीं दिया। 1950 के दशक में जब बड़े–बड़े सार्वजनिक निर्गमों की स्थापना सोवियत रूस की नकल पर 'महालनोबिस' माडल पर हो रही थी, उन्होंने इसका विरोध किया था। उनके विरोध का आधार था, भारत के संदर्भ में पश्चिम की अंधी नकल। वे बड़े उद्योगों के विरोधी नहीं थे, परंतु वे भारत की तत्कालीन परिस्थितियों के आधार पर लघु–उद्योगों को बढ़ावा

देना चाहते थे, जिससे ग्रामीण अर्थव्यवस्था सुधरे। वे मानते थे कि देश की औद्योगीकरण का आधार उसकी परिस्थितियां व जरूरतें हों, न कि औरों की नकल।

आज लगभग 60 वर्ष बाद उनकी बात अक्षरशः सत्य प्रतीत हो रही है। हमारे गांव और गरीबी जहां थी, कमोबेश अभी भी वहीं पर है, जबकि ज्यादातर बड़े सार्वजानिक उद्गम सफेद हाथी साबित हुए हैं। वहीं आज देश लघु और मझोले उद्योगों की महत्ता को समझ रहा है। आज हमारे कुल औद्योगिक उत्पाद का 40 प्रतिशत और निर्यात का 45 प्रतिशत इन छोटे उद्योगों से ही आता है। काश, हमारे नीति–नियंताओं ने पं दीनदयाल उपाध्याय जी की बात तब सुनी होती, तो आज भारत का आर्थिक और औद्योगिक परिदृश्य ही कुछ और होता। अब समय आ गया है कि पूरा देश इस पुरोधा को जाने, समझे और उनके दिये चिंतन पर व्यवहार करे। पं दीनदयाल सिर्फ एक दल के नहीं हैं, वे पूरे देश के हैं, हम सभी के हैं।

सुविधाओं में पलकर कोई भी सफलता पा सकता हैय पर अभावों के बीच रहकर शिखरों को छूना बहुत कठिन है। 25 सितम्बर, 1916 को जयपुर से अजमेर मार्ग पर स्थित ग्राम धनकिया में अपने नाना पंडित चुन्नीलाल शुक्ल के घर जन्मे पंडित दीनदयाल उपाध्याय ऐसी ही विभूति थे।

दीनदयाल जी के पिता श्री भगवती प्रसाद ग्राम नगला चन्द्रभान, जिला मथुरा, उत्तर प्रदेश के निवासी थे। तीन वर्ष की अवस्था में ही उनके पिताजी का तथा आठ वर्ष की अवस्था में माताजी का देहान्त हो गया। अतः दीनदयाल का पालन रेलवे में कार्यरत उनके मामा ने किया। ये सदा प्रथम श्रेणी में ही उत्तीर्ण होते थे। कक्षा आठ में उन्होंने अलवर बोर्ड, मैट्रिक में अजमेर बोर्ड तथा इण्टर में पिलानी में सर्वाधिक अंक पाये थे।

14 वर्ष की आयु में इनके छोटे भाई शिवदयाल का देहान्त हो गया। 1939 में उन्होंने सनातन धर्म कालिज, कानपुर से प्रथम श्रेणी में बी.ए. पास किया। यहीं उनका सम्पर्क संघ के उत्तर प्रदेश के प्रचारक श्री भाऊराव देवरस से हुआ। इसके बाद वे संघ की ओर खिंचते चले गये। एम.ए. करने के लिए वे आगरा आये पर घरेलू परिस्थितियों के कारण एम.ए. पूरा नहीं कर पाये। प्रयाग से इन्होंने एल.टी. की परीक्षा भी उत्तीर्ण की। संघ के तृतीय वर्ष की बौद्धिक परीक्षा में उन्हें पूरे देश में प्रथम स्थान मिला था।

अपनी मामी के आग्रह पर उन्होंने प्रशासनिक सेवा की परीक्षा दी। उसमें भी वे प्रथम रहेय पर तब तक वे नौकरी और गृहस्थी के बन्धन से मुक्त रहकर संघ को सर्वस्व समर्पण करने का मन बना चुके थे। इससे इनका पालन–पोषण करने वाले मामा जी को बहुत कष्ट हुआ। इस पर दीनदयाल जी ने उन्हें एक पत्र लिखकर क्षमा माँगी। वह पत्र ऐतिहासिक महत्त्व का है। 1942 से उनका प्रचारक जीवन गोला गोकर्णनाथ (लखीमपुर, उ.प्र.) से प्रारम्भ हुआ। 1947 में वे उत्तर प्रदेश के सहप्रान्त प्रचारक बनाये गये।

1951 में डा. श्यामाप्रसाद मुखर्जी ने नेहरू जी की मुस्लिम तुष्टीकरण की नीतियों के विरोध में केन्द्रीय मन्त्रिमण्डल छोड़ दिया। वे राष्ट्रीय विचारों वाले एक नये राजनीतिक दल का गठन करना चाहते थे। उन्होंने संघ के तत्कालीन सरसंघचालक श्री गुरुजी से सम्पर्क किया। गुरुजी ने दीनदयाल जी को उनका सहयोग करने को कहा। इस प्रकार 'भारतीय जनसंघ' की स्थापना हुई। दीनदयाल जी प्रारम्भ में उसके संगठन मन्त्री और फिर महामन्त्री बनाये गये।

1953 के कश्मीर सत्याग्रह में डा. मुखर्जी की रहस्यपूर्ण परिस्थितियों में मृत्यु के बाद जनसंघ की पूरी जिम्मेदारी दीनदयाल जी पर आ गयी। वे एक कुशल संगठक, वक्ता, लेखक, पत्रकार और चिन्तक भी थे। लखनऊ में राष्ट्रधर्म प्रकाशन की स्थापना उन्होंने ही की थी। एकात्म मानववाद के नाम से उन्होंने नया आर्थिक एवं सामाजिक चिन्तन दिया, जो साम्यवाद और पूँजीवाद की विसंगतियों से ऊपर उठकर देश को सही दिशा दिखाने में सक्षम है।

उनके नेतृत्व में जनसंघ नित नये क्षेत्रों में पैर जमाने लगा। 1967 में कालीकट अधिवेशन में वे सर्वसम्मति से अध्यक्ष बनाये गये। चारों ओर जनसंघ और पंडित दीनदयाल जी के नाम की धूम मच गयी। यह देखकर विरोधियों के दिल फटने लगे। 11 फरवरी, 1968 को वे लखनऊ से पटना जा रहे थे। रास्ते में किसी ने उनकी हत्या कर मुगलसराय रेलवे स्टेशन पर लाश नीचे फेंक दी। इस प्रकार अत्यन्त रहस्यपूर्ण परिस्थिति में एक मनीषी का निधन हो गया।

'मानवीय एकता' का मंत्र हम सभी का मार्गदर्शन करता है:–

एकात्म मानववाद के प्रणेता पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी का मानना था कि भारतवर्ष विश्व में सर्वप्रथम रहेगा तो अपनी सांस्कृतिक संस्कारों के कारण। पं दीनदयाल जी द्वारा दिया गया मानवीय एकता का मंत्र हम सभी का मार्गदर्शन करता है। उन्होंने कहा था कि मनुष्य का शरीर, मन, बुद्धि और आत्मा ये चारों अंग ठीक रहेंगे तभी मनुष्य को चरम सुख और वैभव की प्राप्ति हो सकती है। उनका कहना था कि जब किसी मनुष्य के शरीर के किसी अंग में कांटा चुभता है तो मन को कष्ट होता है, बुद्धि हाथ को निर्देशित करती है कि तब हाथ चुभे हुए स्थान पर पल भर में पहुँच जाता है और कांटें को निकालने की चेष्टा करता है, यह एक स्वाभाविक प्रक्रिया है। सामान्यतः मनुष्य शरीर, मन, बुद्धि और आत्मा इन चारों की चिंता करता है। मानव की इसी स्वाभाविक प्रवृति को पं. दीनदयाल उपाध्याय ने एकात्म मानववाद की संज्ञा दी।

भारतीयता की अभिव्यक्ति राजनीति के द्वारा न होकर उसकी संस्कृति के द्वारा ही होगी:–

उनका मानना था कि भारत की आत्मा को समझना है तो उसे राजनीति अथवा अर्थ–नीति के चश्मे से न देखकर सांस्कृतिक दृष्टिकोण से ही देखना होगा। भारतीयता की अभिव्यक्ति राजनीति के द्वारा न होकर उसकी संस्कृति के द्वारा ही होगी। समाज में जो लोग धर्म को

बेहद संकुचित दृष्टि से देखते और समझते हैं तथा उसी के अनुकूल व्यवहार करते हैं, उनके लिये पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी की दृष्टि को समझना और भी जरूरी हो जाता है। वे कहते हैं कि विश्व को भी यदि हम कुछ सिखा सकते हैं तो उसे अपनी सांस्कृतिक सहिष्णुता एवं कर्तव्य–प्रधान जीवन की भावना की ही शिक्षा दे सकते हैं। आपके विचारों के भाव इन पंक्तियों द्वारा अभिव्यक्त होते हैं – काली रात नहीं लेती है नाम ढलने का, यही तो वक्त है 'सूरज' तेरे निकलने का।

अर्थ के अभाव में धर्म टिक नहीं पाता हैः –

पंडित दीनदयाल जी के अनुसार धर्म महत्वपूर्ण है परंतु यह नहीं भूलना चाहिए कि अर्थ के अभाव में धर्म टिक नहीं पाता है। एक सुभाषित आता है– बुभुक्षितः किं न करोति पापं, क्षीणजनाः निष्करुणाः भवन्ति। अर्थात भूखा सब पाप कर सकता है। विश्वामित्र जैसे ऋषि ने भी भूख से पीड़ित हो कर शरीर धारण करने के लिए चांडाल के घर में चोरी कर के कुत्ते का जूठा मांस खा लिया था। हमारे यहां आदेश में कहा गया है कि अर्थ का अभाव नहीं होना चाहिए क्योंकि वह धर्म का द्योतक है। इसी तरह दंडनीति का अभाव अर्थात अराजकता भी धर्म के लिए हानिकारक है। पंडित जी का ''चरैवेति–चरैवेति'' के प्रतीक पुरूषार्थ से भरा जीवन उत्साह देता है।

पं. दीन दयाल उपाध्याय जी के विचार देश ही नहीं, दुनिया का मार्गदर्शन कर सकते हैं–

हमारा मानना है कि पं दीन दयाल उपाध्याय जी के विचार देश ही नहीं, दुनिया का मार्गदर्शन कर सकते हैं। उनका कहना था कि हमारी प्रगति का आंकलन सामाजिक सीढ़ी के सर्वोच्च पायदान पहुंचे व्यक्ति से नहीं बल्कि सबसे निचले पायदान पर खड़े व्यक्ति की स्थिति से होगा। उनका मानना था कि भारत की सांस्कृतिक विविधता ही उसकी असली ताकत है और इसी के बूते पर वह एक दिन विश्व मंच पर अगुवा राष्ट्र बन सकेगा। कई साल पहले उनके द्वारा स्थापित यह विचार आज माननीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी के द्वारा किये जाने वाले कार्यों के कारण मूर्तरूप ले रहा है। आज भारत की सांस्कृतिक विरासत पूरी दुनिया को प्रकाशमान कर रही है और शायद वह दिन दूर नहीं जब भारत विश्व मंच पर पूरी दुनिया को राह दिखाने वाला होगा। आइये, हम सब मिलकर उदारचरितर्थनाम ''वसुधैव कुटुम्बकम'' की भारत की अपनी सभ्यता, संस्कृति तथा संविधान के अनुरूप न्याय आधारित विश्व बनाने का संकल्प लें।

सन्दर्भ :

1. पाठक, पी0डी0 व जी0एस0डी0त्यागीः 2006, "शिक्षा के सामान्य सिद्धान्त", विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा–282002

2. पाण्डेय, रामशकलः 2005, द्वितीय संस्करण, "उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षक" विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा–282002

3. राठौर, कुसुम लताः 2009, प्रथम संस्करण, "उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षक", आर0लाल बुक डिपो, निकट राजकीय इण्टर कॉलेज, मेरठ–250001

4. राय, पारस नाथः 2007, द्वादशम् संस्करण, "अनुसंधान परिचय", लक्ष्मी नारायण अग्रवाल, आगरा–282002

5. सक्सेना, एन0आर0स्वरूपः 2002, ग्यारहवाँ संस्करण "उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षक" सूर्या पब्लिकेशन, निकट राजकीय इण्टर कॉलेज, मेरठ–250001

6. सक्सेना, एन0आर0स्वरूप व शिखा चतुर्वेदीः 2007, "उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षक", आर0लाल बुक डिपो, निकट राजकीय इण्टर कॉलेज, मेरठ–250001

7. अग्रवाल जे0 सी0ः 1972 "विद्यालय प्रशासन", आर्य बुक डिपो, करौलबाग, नई दिल्ली–51

8. भिषीकर, चन्द्रशेखर परमानन्दः 1991, द्वितीय संस्करण, "पं0 दीनदयाल उपाध्याय विचार दर्शन" खण्ड–5 (राष्ट्र की अवधारणा), सुरुचि प्रकाशन, झण्डेवालान, नईदिल्ली–110055

9. उपाध्याय,दीनदयालः 2007, दशम् संस्करण, "राष्ट्र जीवन की दिशा", लोकहित प्रकाशन, संस्कृति भवन राजेन्द्रनगर, लखनऊ–226004